International Journal for Research Publication and Seminar
ISSN: 2278-6848 | Vol. 15 | Issue 4 | Oct-Dec 2024 | Peer Reviewed & Refereed

छायावाद युग की विशेषताएँ – एक अध्ययनात्मक विश्लेषण

Dr. Bimal Malik,
Assistant Professor Dept. Of Hindi, CRM
Jat College, Hisar

DOI : https://doi.org/10.36676/jrps.v15.i4.267
Published: 22/12/2024
Check for updates
* Corresponding author

सारांश: छायावाद हिंदी साहित्य का एक क्रांतिकारी युग था जिसने कविता को नए भावबोध, नवीन शिल्प और आत्मान्वेषण की दिशा प्रदान की। इस युग में कवियों ने आत्मा, प्रकृति, सौंदर्य, प्रेम और रहस्य को केंद्र में रखकर काव्य-सृजन किया। यह शोध-पत्र छायावादी युग की प्रमुख विशेषताओं, इसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, प्रमुख कवियों और साहित्यिक योगदानों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। छायावाद हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण युग है, जो लगभग 1900 से 1920 तक फैला। यह युग रोमांटिसिज्म और भावुकता से ओतप्रोत था, जिसमें कवियों ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों, मनोभावों और प्रकृति के माध्यम से मानव मन की गहराइयों को उजागर किया।

परिचय: छायावाद हिंदी साहित्य में 1918 से 1936 तक सक्रिय एक प्रमुख साहित्यिक आंदोलन था। यह युग भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि में विकसित हुआ, जिसमें आत्मबोध, स्वत्व की खोज, रहस्यवाद और व्यक्तिवाद जैसे तत्व प्रबल हुए। छायावाद हिंदी साहित्य का वह युग है जो लगभग 1900 से 1918 के बीच रहा। इसे हिंदी कविता का संवेदनशील और भावुक युग भी कहा जाता है। यह युग भारतीय समाज में बदलाव, राजनीतिक और सांस्कृतिक जागरण के दौर के साथ मेल खाता है। छायावाद युग की कविताओं में भावुकता, प्रकृति का विस्तृत चित्रण, आध्यात्मिकता और कल्पना की प्रधानता मिलती है। इस युग के कवि मानवीय अनुभवों, प्रेम, विरह, दुःख, और जीवन के रहस्यों की अभिव्यक्ति में निपुण थे।

छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ:

- **व्यक्तिवाद का उत्थान:** छायावाद में 'मैं' की अभिव्यक्ति प्रमुख है। कवि अपनी आत्मा, अनुभूतियों और कल्पनाओं के माध्यम से काव्य-सृजन करता है।
- **भावुकता और कल्पना की प्रधानता:** छायावाद के कवि अपनी कविताओं में गहरे भावों और कल्पनाओं को व्यक्त करते हैं। वे अपने मन के अनुभवों को अत्यंत सूक्ष्मता से दर्शाते हैं।
- **रहस्यवाद और आध्यात्मिकता:** इस युग की कविता में एक प्रकार का दार्शनिक और रहस्यात्मक भाव होता है जो आत्मा और ब्रह्म के संबंध को दर्शाता है।

- **प्रकृति चित्रण:** प्रकृति का अत्यंत सूक्ष्म और सुंदर चित्रण छायावादी काव्य की एक प्रमुख विशेषता है। कवि प्रकृति को केवल बाह्य रूप में नहीं, बल्कि भावात्मक रूप में चित्रित करता है।
- **प्रेम का आध्यात्मिक रूप:** प्रेम छायावाद में वासना रहित, शुद्ध और आत्मिक होता है। यह 'अनामी-गोपनीय' स्वरूप में अभिव्यक्त होता है।
- **कल्पनाशीलता और सौंदर्यबोध:** छायावादी काव्य अत्यंत कल्पनाशील होता है और उसमें सौंदर्य की खोज, कलात्मकता और भावुकता प्रमुख रहती है।
- **प्रकृति की छटा और सौंदर्य:** इस युग की कविताओं में प्रकृति का वर्णन अत्यंत सुंदर और विस्तृत होता है। प्रकृति के हर रूप—फूल, नदियाँ, पहाड़, पक्षी—कवि की आत्मा से जुड़ा होता है।
- **अंतरात्मा की खोज:** छायावाद के कवि जीवन के आध्यात्मिक पहलुओं और आत्मा की गहराइयों को समझने का प्रयास करते हैं। वे मनुष्य के अंदर झांकने और उसके दुःख, आशाओं को तलाशने में लगे रहते हैं।
- **एकांतप्रियता और विरह:** एकांत, अकेलापन, और विरह की भावना इस युग की कविता में प्रमुख है। कवि अक्सर प्रेम और जीवन के दुःखों को एकांत में झांक कर व्यक्त करते हैं।
- **राष्ट्रीय जागरण का प्रतिबिंब:** यद्यपि छायावाद मुख्यतः भावुकता पर आधारित है, फिर भी कुछ कवियों ने अपने काव्य में राष्ट्र प्रेम और सामाजिक चेतना की झलक भी दी।

भाषा-शैली: छायावादी कवियों ने तत्सम शब्दों का प्रयोग करते हुए काव्य-भाषा को अत्यंत सुरुचिपूर्ण, काव्यात्मक और संस्कृतनिष्ठ बनाया। छायावादी कवि अपनी रचनाओं में भावों को मुख्य स्थान देते हैं। भाषा सरल होते हुए भी बहुत संवेदनशील और प्रभावपूर्ण होती है। भावों की गहराई को प्रकट करने के लिए विशेष शब्दों और अलंकारों का प्रयोग किया गया है।

- **सुगम और प्रवाही शैली:** छायावाद की भाषा सहज, प्रवाही और प्रवचनात्मक होती है, जिससे पाठक आसानी से कविता की भाव-गति में प्रवेश कर सके। अतः यह भाषा कठिन या संस्कृतप्रमुख नहीं, बल्कि सरल और आम बोलचाल के करीब होती है।
- **प्रतीकात्मक और रूपकात्मक प्रयोग:** इस युग की भाषा में प्रतीक, रूपक, उपमा, अलंकार जैसे साहित्यिक उपकरणों का प्रचुर प्रयोग होता है, जिससे भाषा की अभिव्यक्ति और भी संगीतमय और मनोहर बन जाती है। उदाहरण के लिए, चाँद, शाम, कोयल, सायं जैसे प्राकृतिक प्रतीक अत्यधिक प्रयोग होते हैं।
- **मनोरम छायाएँ:** इस शैली में मनोदशा और मनोभावों की सूक्ष्म छायाएँ पाठक के समक्ष प्रस्तुत होती हैं। भाषा में एक प्रकार की रहस्यमयी, मृगमरीचिका जैसी छवि निर्मित होती है, जो छायावाद का सबसे बड़ा लक्षण है।

- **स्वरमयता और गीतात्मकता:** छायावाद की भाषा में गीतात्मक प्रवाह और लयात्मकता होती है। छायावाद के कवि भाषा के संगीत की ओर विशेष ध्यान देते हैं। इसीलिए उनकी कविता में छन्दबद्धता और लय की समृद्धि होती है।
- **दूरस्थ और कल्पनाशील भाषा:** यह भाषा अक्सर कल्पनाओं और भावों को दर्शाने के लिए दूरस्थ और प्रतीकात्मक होती है, जिससे यह सीधे-सीधे अर्थों के बजाय संकेतात्मक अर्थ प्रस्तुत करती है।
- **संस्कृत एवं हिंदी का मिश्रण:** छायावाद के कवि भाषा को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए संस्कृत शब्दों का भी चयन करते हैं, लेकिन वे उसे अत्यधिक कठोर नहीं बनाते। हिंदी और संस्कृत का यह मिश्रण भाषा को सौम्यता और गंभीरता प्रदान करता है।
- **व्यक्तिगत और आत्मानुभूति प्रधान:** भाषा में कवि की आत्मीय अनुभूतियाँ, मनोभाव और व्यक्तिगत दुख-समाज की जटिलताएँ स्पष्ट झलकती हैं। छायावाद के कवि भाषा में स्वयं की अंतरंग भावनाओं को प्रमुखता देते हैं।

छायावादी युग के प्रमुख कवि:

- **जयशंकर प्रसाद:** 'कामायनी' जैसे महाकाव्य में दर्शन, मनोविज्ञान, भावात्मकता और सौंदर्यबोध का अद्भुत समन्वय है।
- **सुमित्रानंदन पंत:** सौंदर्य, प्रकृति और मानवतावाद के कवि। 'पल्लव' और 'गुंजन' जैसी रचनाएँ प्रसिद्ध हैं।
- **महादेवी वर्मा:** वेदना की स्वर-यात्रा की कवयित्री। उनका काव्य 'नीरजा', 'यामा' आदि में करुणा, पीड़ा और संवेदनशीलता की गहराई है।
- **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला':** विद्रोह, नवचेतना और स्वाभिमान के स्वर। 'परिमल', 'अनामिका' आदि काव्य संग्रहों में छायावाद और प्रगतिवाद का मेल दिखाई देता है।

प्रमुख छायावादी कवि और उनकी काव्य-कृतियाँ:

कवि	प्रमुख रचनाएँ
जयशंकर प्रसाद	कामायनी, आंसू, झरना
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	परिमल, अनामिका, गीतिका
सुमित्रानंदन पंत	पल्लव, वीणा, युगांत

निष्कर्ष: छायावाद युग हिंदी काव्य का आत्मसंधान युग था जिसने कविता को भाव, अनुभूति और सौंदर्य के उच्चतम स्तर तक पहुँचाया। यद्यपि बाद में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के चलते इसकी आलोचना हुई, परंतु आज भी छायावादी काव्य अपनी गहराई, भावप्रवणता और सौंदर्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण बना हुआ है। छायावाद युग हिंदी कविता के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस युग ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा और गहराई प्रदान की। यह युग मानव मन की सूक्ष्मताओं को उकेरने में सफल रहा और भावों की

अभिव्यक्ति के लिए समृद्ध भाषा और शैली का विकास किया। छायावाद ने हिंदी साहित्य को एक नवजीवन दिया, जो भावनाओं और कल्पना की दुनिया में डूबा हुआ था।

संदर्भ सूची:

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. *हिंदी साहित्य का इतिहास*
2. मिश्र, रामचंद्र शुक्ल. *हिंदी साहित्य का इतिहास*
3. पंत, सुमित्रानंदन. *काव्य और कला*
4. प्रसाद, जयशंकर. *कामायनी*
5. वर्मा, महादेवी. *यामा*